महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम की पीएच.डी की उपाधि के लिए प्रस्तावित शोध विषय की अंतिम रूपरेखा

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में मिथकीय प्रयोग

साहित्य में नाट्य-विधा का अपना एक अलग महत्व है। नाटक समकालीन संदर्भों से उपजे साहित्यिक शिल्प एवं कथ्य के साथ-साथ गीत-संगीत से सराबोर एक ऐसा जीवन माध्यम है, जिसमें प्रायः सभी कलाओं की छाप एक साथ प्रतिबिम्बित होती है। लेकिन हिन्दी साहित्य की दूसरी प्रमुख विधाओं की तुलना में नाट्यविधा की स्थिति उतनी आशाजनक नहीं है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद जैसे युगधर्मी नाटककारों के बाद विशेष उल्लेखनीय नाटककारों का अभाव दशकों तक हिन्दी नाटक साहित्य में प्रतिफलित हुआ था। इसके बावजूद स्वतंत्रता के बाद के दो-तीन दशक हिन्दी नाट्य-साहित्य के क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण दिखाई देते हैं। इस अवधि में भारतेन्दु या प्रसाद के समान कोई युगधर्मी नाटककार तो नहीं उभर आए, परन्तु कई ऐसे नाटककार सामने आए, जिन्होंने अपनी नाट्य-रचनाओं के द्वारा हिन्दी नाट्य-साहित्य को न केवल नई पहचान दी, साथ-ही-साथ नाटक की रंगमंचीय संभावनाओं को भी पर्याप्त रूप से उभारा है। इस दौर में मोहन राकेश, जगदीशचन्द्र माथुर, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण लाल, सुरेन्द्र वर्मा, शंकर शेष, रमेश बक्षी, ज्ञानदेव अग्निहोत्री, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, गिरिराज किशोर, दुष्यन्त कुमार, भीष्म साहनी, दूधनाथ सिंह, प्रभाकर क्षेत्रिय, नन्दकिशोर आचार्य, मणि मधुकर, नरेन्द्र मोहन, प्रताप सहगल जैसे संभावना पूर्ण नाटककारों की एक लंबी सूची मिलती है, जिनमें हर एक के कम से कम दो-तीन नाटक व्यापक चर्चा के केन्द्र में आए हैं। इसीलिए ही शायद हिन्दी नाट्य-आलोचना और हिन्दी नाट्य-अनुसंधान के क्षेत्र में इस दौर के नाटकों को अध्ययन के केन्द्र बनाने की प्रवृत्ति ज्यादातर दिखाई देती है।

यद्यपि विषयगत दृष्टि से प्रस्तुत दौर के नाटकों में पर्याप्त विविधता है, फिर भी सबसे चर्चित नाटकों की पंक्ति में वे नाटक आते हैं, जो पुराण या इतिहास को आधार बनाकर लिखे गए हैं। इनमें पौराणिकता या ऐतिहासिकता को बिल्कुल नए परिप्रेक्ष्य में देखा गया है। यहाँ पौराणिकता या ऐतिहासिकता साधन मात्र है और नाटककारों का उद्देश्य इनके माध्यम से उन समस्याओं को उकेरना है जो ठेठ सामयिक और सामाजिक दोनों हों। समकालीन नाटककारों ने हमारे पौराणिक आख्यानों में आधुनिक संभावनाओं की खोज की है। उन्होंने प्राचीनता के उन अंशों को स्वीकार किया, जिनमें समकालीन जीवन-यथार्थ को उजागर करने की ज्यादा क्षमता हो। इतिहास के परिपार्श्व में उन्होंने उन क्षणों को खोज निकाला है जो वर्तमान में विद्यमान हैं, अतीत में भी विद्यमान थे, और भविष्य में भी संभावित हो सकते हैं। उनकी नाट्य-कृतियाँ अपने में अतीत को समेटे हुए होने पर भी अपना तीक्ष्ण प्रभाव वर्तमान-जीवन पर छोडनी हैं। इसलिए इन नाट्य-कृतियों का इतिहास-पुराण एक प्रतीक बनकर दर्शकों पर एक ऐसा प्रभाव छोड़ता है जो एक तरफ परंपराओं से जुड़े रहने के साथ-साथ अपनी प्रामाणिकता एवं विश्वसनीयता सिद्ध करता है, तो दूसरी तरफ पुरावृत्त के नकाब ओढ़े एक नया दर्शन पेश करता है। जीवन के विकसित मूल्य और उनकी व्याप्ति स्वातंत्र्योत्तर नाटककारों के द्वारा रचित नाटकों में रेखांकित किया गया है।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में ऐतिहासिक एवं पौराणिक संदर्भों का संकेत के रूप में उपयोग करते हुए पुराख्यानों एवं प्रतीकों की नाटककारों की अपनी दृष्टि से युगानुरूप व्याख्या की गयी। कई नाट्य-कृतियों में तो नाटककारों ने परंपरागत इतिवृत्त को सर्वथा बदलकर अपनी मांग के अनुरूप उसका उपयोग किया। इनमें से पुराणाश्रित स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों को प्रस्तुत अध्ययन का विषय बनाया गया है।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटककार सही अर्थ में जनवादी धारा के लेखक हैं। वे सही अर्थ में अपनी नाट्य-कृतियों द्वारा आम आदमी का ज़िन्दगीनामा ही हमारे सामने पेश करते

हैं। व्यवस्था के हाथों वंचित आदमी के लिए न्याय की माँग और शोषण के प्रति उसे जागरूक करना ही उनका लक्ष्य है। समाज में दलितों और शोषितों के उद्धार हेतु उन्होंने अपनी नाट्य-कृतियों द्वारा जो अथक प्रयास किया है, उस पर प्रकाश डालने में यह अध्ययन एक सार्थक प्रयास होगा यही उम्मीद है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध "स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में मिथकीय प्रयोग" पाँच अध्यायों में विभक्त है। "मिथक और साहित्य अंतः संबन्ध के पहलू" नामक प्रथम अध्याय में मिथक का अर्थ स्पष्ट करते हुए पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों की मिथक-संबन्धी परिभाषाओं को विश्लेषित किया गया है। मिथक के उद्‌भव और विकास की चर्चा भी प्रस्तुत अध्याय में की गई है। इसके साथ ही मिथक और साहित्य के अंतः संबन्ध को भी विस्तृत रूप से परखने का प्रयास इसमें किया गया है। अन्त में इस अध्याय में इस निष्कर्ष पर पहूँचते हैं कि मिथक का साहित्य पर प्रभाव चिर-काल से अद्यतन युग तक रहा है। समय-समय पर मिथक की उत्पत्ति साहित्य को नए-नए आयामों से अलंकृत करती है। मिथक, साहित्य के भावपक्ष एवं कला पक्ष दोनों पहलुओं को एक समान परिवर्तित करता है। मिथक एवं साहित्य के तत्व प्रायः समान है, जैसे कथ्यात्मकता, चित्रात्मकता, कल्पनाशीलता आदि। मिथकीय कल्पना द्वारा शब्द-भण्डार का निर्माण हो सकने के कारण ही साहित्यिक सृजन संभव हो सकता है।

"स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी मिथकीय नाटक : एक विहंगम दृष्टि" नामक दूसरे अध्याय में स्वतंत्रता के बाद लिखे गए महत्वपूर्ण मिथकीय नाटकों का प्रवृत्तिगत परिचय दिया गया है। मिथकीय परिकल्पना स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों की एक प्रमुख प्रवृत्ति है। प्रारंभ से लेकर समकालीन युग तक के मिथकीय नाटकों का संक्षिप्त ऐतिहासिक सर्वेक्षण प्रस्तुत करने का प्रयास इसमें किया गया है। अन्त में इस निष्कर्ष पर पहूँचते हैं कि स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी मिथकीय नाटकों में ऐतिहासिक एवं पौराणिक संदर्भों को संकेत के रूप में उपयुक्त करके पुराख्यानों और प्रतीकों की, अपनी दृष्टि से समयानुकूल व्याख्या की गयी। कई नाट्य

कृतियों में तो नाटककारों ने पौराणिक इतिवृत्त को सर्वथा बदलकर अपनी माँग के अनुसार उसका उपयोग किया। इन नाटकों में समकालीन सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक यथार्थ की अभिव्यक्ति करने के लिए मिथकीय संदर्भों एवं पात्रों का प्रयोग किया गया है।

"स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : मिथक के सहारे सामाजिक विद्रूपताओं की अभिव्यक्ति" नामक तीसरे अध्याय में स्वतंत्रता के बाद के ऐसे मिथकीय नाटकों का विशेष अध्ययन किया गया है जिनमें मिथकों का आसरा लेकर स्वतंत्रता के बाद के भारत की सामाजिक विद्रूपताओं की कलात्मक अभिव्यक्ति हुई है। अंत में इस निष्कर्ष पर पहूँचते हैं कि समाज, एक ऐसी व्यवस्था है, जिससे मनुष्य का अस्तित्व जुड़ा है और हर पल यह अपना रूप बदलता रहता है। साहित्य इन बदलती परिस्थितियों को प्रतिबिम्बित करने वाला एक सशक्त माध्यम है। आज पूरा विश्व संकट और तनाव के दौर से गुज़र रहा है। साहित्य ऐसी परिस्थितियों को उजागर करने वाला सशक्त माध्यम है। स्वातंत्र्योत्तर मिथकीय नाटक मानव और उनके संबन्धों में पड़ी दरारें, व्यक्ति, परिवार, स्त्री-जीवन आदि के अंतर्द्वन्द्वों की ओर रखा हुआ आईना है। सामाजिक जीवन के विभिन्न आयामों को पकड़ने की कोशिश इन नाटकों द्वारा हुई है।

"स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : मिथक के सहारे राजनीतिक और सांस्कृतिक विसंगतियों की अभिव्यक्ति" नामक चौथे अध्याय में स्वतंत्रता के पश्चात् लिखे गए ऐसे नाटकों का विशेष अध्ययन किया गया है, जिनमें स्वतंत्रता के बाद वाले भारत के राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में हुई समस्याओं की व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति है। इस अध्याय में समकालीन मिथकीय नाटकों में प्रस्तुत राजनीति का अपराधीकरण, गरीबी, युवावर्गों में बढ़ता असंतोष, भारतीय नारी की त्रासदी, भ्रष्टाचार, शोषण, सांस्कृतिक संकट, सर्जनात्मक चेतना, राज्याश्रय की समस्या, अभिव्यक्ति की आज़ादी की समस्या आदि बिन्दुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। अन्त में यह निष्कर्ष निकलता है कि स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी

मिथकीय नाटक बदलते राजनैतिक, सांस्कृतिक विसंगतियों का एक सफल लेखा-जोखा है। इनमें इसी बात का पर्दाफाश हुआ है कि आज किस तरह समाज में उपभोगवादी सभ्यता और स्वार्थ-लिप्सा से लैस ऋणात्मक अपसंस्कृति पनप रही है। आज सांस्कृतिक परिवर्तनों ने जीवन के काफी सारे अर्थों को, आचार-शिष्टाचारों को जड़ से उखाड फेंका है। जनता को अपने शासकों तथा नेताओं से किस प्रकार भरोसा उड़ गया है, ये नाटक इस बात का सफल दस्तावेज़ हैं। आज शासन, चुनाव, नेता आदि में सत्ता कितनी गहराई से धंस चुकी है, आज की राजनीति किस तरह राष्ट्र के विकास की धारा को विघटित कर रही है, उसमें आज जातिवाद की अहमीयत कितनी बढ़ गयी है, इस समय के कई मिथकीय नाटक इसकी कलात्मक प्रस्तुति पेश करते हैं। स्वातंत्र्योत्तर नाटककारों द्वारा राजनैतिक, सांस्कृतिक विसंगतियों के आयामों को मिथक की पृष्ठभूमि में बेमिसाल ढ़ंग से पेशकश किया गया है। स्वातंत्र्योत्तर मिथकीय नाटकों में दलित संस्कृति, दलितों के जीवन आदि को भी आलोकित किया गया है।

"आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी मिथकीय नाटक" नामक पाँचवें और अंतिम अध्याय में स्वतंत्रता के बाद के हिन्दी साहित्य की एक खास विषय 'आधुनिकता' के संदर्भ में स्वतंत्रता के बाद लिखे गए नाटकों को आलोकित किया गया है। इस अध्याय में आधुनिकता की परिभाषा, स्वरूप एवं अवधारणा आदि पर प्रकाश डालते हुए आधुनिकता और साहित्य के अंतःसंबन्ध को परखने एवं स्वतंत्रता के बाद लिखे गए नाटकों में आधुनिकता की जो छाप नाटककारों ने छोड़ी है उस पर संक्षिप्त विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। अंत में यह निष्कर्ष निकला है कि आधुनिकता स्वतंत्रता के बाद के हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, जो कई सालों तक हिन्दी आलोचना का चर्चित बल्कि विवादास्पद विषय थी। स्वातंत्र्योत्तर नाटककारों ने अपने नाटकों में पौराणिक मिथकों, प्रतीकों के प्रयोग द्वारा आधुनिक सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि तमाम पहलुओं की विसंगतियों की नब्ज़ को पकड़ने की कोशिश की है और इसमें वे एक हद तक सफल भी सिद्ध हुए हैं। इन्होंने यह सिद्ध किया है कि मिथक, आधुनिकता और साहित्य ये

तीनों एक ही किताब के तीन पन्ने जैसे हैं जो अलग-अलग होने पर भी कहीं न कहीं आपस में जुड़े हैं और इन तीनों के भली-भान्ति बँध जाने से ही मानव-जीवन रूपी किताब को सही ढ़ंग से संजोकर रखा जा सकता है।

अंत में 'उपसंहार' दिया गया है, जो इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि मिथकीय पात्रों या पुरावृत्तों को लेकर हिन्दी साहित्य में अनेकानेक नाट्य-रचनाएँ हुई है, उनमें भी आधुनिक नाटककारों ने एक खास नज़रिए से मिथक का प्रयोग किया है, जिसके ज़रिए वे हमारे देश की प्रतिक्रियाविहीन जनता के दिल तक दस्तक देना चाहते थे, उन्हें यथार्थ के आलोक में लाना उनका मकसद रहा है। पुराण के संकेतों, प्रतीकों, पात्रों, घटनाओं के अधुनातन प्रयोग द्वारा उन्होंने समकालीन जीवन की सच्चाई का बेमिसाल पेशकश ही दर्शकों, पाठकों के सामने किया है। इन नाटककारों ने मिथकीय प्रयोगों के ज़रिए सामाजिक पहलु पर से विसंगतियों, विद्रूपताओं को हटाने की ताकत बटोरे हुए एक जलते मशाल के रूप में अपनी नाट्य-कृतियों को हम प्रबुद्ध भारतीयों के हाथों में सौंपा है, हमें उनके सच्चे ईमानदार आदर्शों को आत्मसात करते हुए एक सही अनुगामी की तरह उस जलते हुए मशाल को अपने हाथ में, मन में लिए आगे बढ़ना चाहिए ताकि हम एक मिसाल बनकर उस मशाल को अगली पीढ़ी के हाथों सही ढ़ंग से सौंप सकें।

Name of the Institution where the Research Programme will be under-taken	:	Department of Hindi Maharaja's College Ernakulam
Name and Signature of the Research Student	:	 **VRINDHA VIJAYAN**

NAME OF THE RESEARCH TOPIC

SWATANTRYOTTAR HINDI NATAKON MEIN MITHAKIYA PRAYOG

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में मिथकीय प्रयोग

Name and Signature of the Research Supervising Teacher

Dr. B. VIJAYAKUMAR
Assistant Professor and HOD
Dept. of Hindi
Panampilly Memorial Govt. College
Chalakkudy
(Research Supervising Teacher
Dept. of Hindi
Maharaja's College, Ernakulam)